रात्रिक्लास 6/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

इसको कहा जाता है सर्विस समाचार। दुनियां भर में है जिस्मानी सर्विस समाचार जिसको सोशल वरकर्स कहते हैं। तुम बच्चे हो स्प्रीचुअल वरकर्स। सोशल वरकर्स स्प्रीचुअल वरर्कस नहीं कहलाये जाते हैं। तुम्हारी ज़ात ही दुनियां से न्यारी। तुम हो ब्राह्मण कुल के। यह कुल तुम्हारा ऊँच है। तुम्हारा ब्राह्मण कुल है पवित्र बनने का; क्योंकि पवित्र ब्राह्मण बन फिर देवता बनने वाले हो। देवताएं कोई सर्विस नहीं करते हैं। तुम सर्विस करते हो। कहा ही जाता है भारत माता। भारत की जो चैतन्य माताएं हैं वह सर्विस करती हैं। क्या सर्विस करती हैं? इस समय यह पुरानी धरणी है आयरन एज्ड। उनको तुम गोल्डेन एज्ड धरणी बनाते हो। तुम भी गोल्डेन एज्ड बनते हो। पारसपुरी के नाथ और नाथनी बनते हो। वहां तो मकान भी सोने के बनते हैं। पारसनाथ कोई सोने का नहीं। इस समय सभी पत्थर बुद्धि हैं। पीछे आत्मा पारस बुद्धि बन जाती हैं। यह बातें और कोई की बुद्धि में नहीं है। विष्णु से वैष्णव अक्षर निकला है। वैष्णव है अहिंसक। आजकल के वैष्णव हैं हिंसक। उनको वैष्णव तो कहा नहीं जा सकता। एक/ दो पर काम कटारी चलाना यह हिंसा है। तुम बच्चे अहिंसक बन रहे हो। कोई समय माया से हरा देते हो; इसलिए सम्पूर्ण नहीं कहला सकते। अभी पुरुषार्थ कर रहे हो सम्पूर्ण बनने लिए। जितना–2 याद करेंगे.....यह है श्रीमत पर अपनी सर्विस। टीचर भी सिखलाते हैं तो मेहनत से पास हो कमाने लग पड़ते हैं। यहां भी आत्माओं को मेहनत करनी पड़ती है। बाबा को याद करने की बच्चों को बहुत–2 प्रैक्टिस चाहिए। यह है नई बात। 5000 वर्ष पहले भी तुम बच्चों को सिखलाया था। इस समय तुम बच्चों की बुद्धि में रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान है। बाप की एक्टिविटी भी इस समय होती है। इस समय ही बाप पुरानी दुनियां को नई बनाते हैं। रचयिता नई चीज़ रचने को कहा जाता है। यह पुरानी को नई बनाते हैं। नई दुनियां को क्रियेट करते हैं। पुरानी दुनियां का विनाश कराते हैं। अभी श्रीमत पर क्रियेट करा रहे हैं पुरानी दुनियां होते हुये। इसमें याद की सब्जेक्ट है नम्बरवन। कॉलेज में पढ़ते हैं तो नम्बरवार सब्जेक्ट होते हैं ना। यह भी बड़ी कॉलेज है। ईश्वरीय यूनिवर्सिटी। गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। ईश्वर को भी फादर कहते हैं ना। यह भी तुम जानते हो बाप ने यूनिवर्सिटी खोली है जहां हम पढ़ते हैं बहुत गुप्त। यह बात भी घड़ी–2 भूल जाते हैं। यह गॉडली यूनिवर्सिटी याद पड़े तो ठीक है। बाप ही याद पड़ेंगे। बाबा की यूनिवर्सिटी कब होती नहीं है। यही है बाबा हमको पढ़ाते हैं। यूनिवर्स अर्थात् सारी सृष्टि। और किसकी यूनिवर्सिटी है नहीं। यूनिवर्स सारे विश्व को कहा जाता है। वह तो एक बाप की ही यूनिवर्सिटी होती है। और कोई की होती नहीं। वहां का अक्षर भारतवासियों ने लिया है। अभी फिर गवर्मेन्ट कहती है गवर्मेन्ट बिगर कोई यूनिवर्सिटी अक्षर न रख सकते हैं। उनको क्या पता पाण्डव गवर्मेन्ट ऊँच ते ऊँच है। उनको पता नहीं कौन सी गवर्मेन्ट ऊँची है। विजय किसकी हुई? गाया जाता है राम गयो–रावण गयो जिनके बहुत परिवार। तुम्हारी पाण्डव सम्प्रदाय बहुत ही छोटी है। रावण सम्प्रदाय का कितना बड़ा परिवार है। यह किसकी बुद्धि में बैठ नहीं सकता। गायन तो ठीक है। रावण का परिवार बहुत है। बच्चे जानते हैं हमारा तो एक ही देवी–देवता धर्म है। वह कितने ढेर हैं। तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए। तुम ब्राह्मण बनते हो फिर प्रजापिता ब्रह्मा के संतान बनते हो। बनते ही हो डाडे से वर्सा लेने। वह डाडा भी हो जाता तो बाप भी हो जाता। भारत में डाडे (दादा) का हक मुकर्रर है। अभी गवर्मेन्ट ने डाडे का हक, बाप का हक कुछ न कुछ दे दिया है; परन्तु मिलता नहीं है। नहीं तो आजकल हक बहुत है। इस (पर) तुम सभी का हक है। गॉड फादरली बर्थ राइट है मुक्ति और जीवनमुक्ति का। मुक्ति में जाकर फिर जीवन मुक्ति में आना है। मुक्ति को कहा जाता है शान्तिधाम। जीवनमुक्ति सुखधाम को कहा जाता है। जो नये–2 पत्ते निकलते हैं उनका ज़रूर पहले मान होगा। उनकी गोल्डेन एज्ड है। मिनिमम वाले एक जन्म । बस, खलास हो जाते हैं। बहुत हल्का एक्टर्स। वर्ष–2 एक्टर्स का मान होता है। पाई पैसे वाले का इतना

मान नहीं। इसमें भी पहले आने वालों का मान बहुत होता है। बाप कहते हैं कोई भी बातों (में) मूंझते हो तो छोड़ दो। सूक्ष्मवतन आदि की बातों में न जाओ। टाइम वेस्ट होता है। मनमनाभव। टाइम वेस्ट न करो। समझ में नहीं आता है तो मूँझ कर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। बाप कहते हैं आगे चलकर समझ में आवेगा। उतावला न करनी चाहिए। मूत बात है याद की, स्वदर्शन चक्र की, दैवी गुणों की। जहां मूँझते हो वहां छोड़ दो। उतावलाई न करो। बाप सभी कुछ बतलाते हैं। रचना के आदि, मध्य, अंत का सभी समाचार आपे ही सुनावेंगे। भक्तिमार्ग में तुमने अनेक बार सुना है। इसमें कब संशय नहीं उठ सकता। हम बाप के संतान हैं। ब्रदर्स हैं ज़रूर; परन्तु हम स्वर्ग़ में क्यों नहीं हैं? पुरानी दुनियां में क्यों हैं? जवाब कौन दे? शिव की जयन्ति भी मनाते हैं। बेहद का बाप ज़रूर स्वर्ग की स्थापना करेंगे। बेहद सुख–शान्ति, पवित्रता का वर्सा बाप से ही मिलता है। स्वर्ग़ में हम सुखी थे तो ज़रूर कोई देने वाला होगा ना। अभी बच्चे समझते हैं बरोबर बाबा स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। बेहद की रात्रि में बाबा आते हैं। आधा कल्प की रात और दिन। इस संगम पर आते हैं। वह सिवाय तुम बच्चों के कोई भी जानते नहीं। शिवरात्रि का भी अर्थ नहीं समझते। समझे तो स्टैम्प्स बना दे। अगर किसकी बुद्धि में बैठे फिर भी आपस में कॉन्फ्रेंस करेंगे। .....से पास करावेंगे। मैजॉरिटी जब समझे तब पास करे। स्टैम्प्स निकाले। सबसे ऊँच बाप की स्टैम्प्स नहीं। वास्तव में वैल्युएबुल स्टैम्प्स है यह एक ही त्रिमूर्ति शिव। सर्व का सद्गति दाता त्रिमूर्ति शिव, उनका स्टैम्प्स क्यों नहीं बनाते? तुम लिख भी सकते हो। यह तो जुल्म है। और सभी की स्टैम्पस निकालते हैं। कब जनावरों के निकालते रहते। मोर का भी कब निकालते हैं। यह है नेशनल बर्ड्स। जब तक गवर्मेन्ट का कोई बड़ा ऑफिसर आदि समझे, सभी पास करें, गवर्मेन्ट स्टैम्प्स बनावें तब बहुत समझ सकते हैं। तुम समझाओ तो ऐसे स्टैम्प्स बनाने का ऑर्डर निकले। यह हो जावेगा सबसे पुराना स्टैम्प्स; परन्तु यह कुछ भी रहेंगे नहीं। ख़त्म हो जावेंगे। तुम बच्चों की कितनी वैल्यु है; इसलिए बाप का स्टैम्प्स तो ज़रूर होना चाहिए। बच्चों को समझाना चाहिए सबसे पहले तो इनका स्टैम्प्स होना चाहिए। यह तो भारत को स्वर्ग़ बनाते हैं। सतयुग में तो स्टैम्प्स आदि होते ही नहीं। कुछ होगा सो तो आगे चल कर पता पड़ेगा। तो ऐसी–2 बातें सुनानी हैं जो समझे इनकी तो बात ठीक है। हम तो तुच्छ बुद्धि हैं। यह बच्चियां तो बहुत ऊँचा रास्ता बताती हैं। बेहद के बाप का जिससे हम यह वर्सा लेते हैं। जो निमित्त बनते हैं बाप के साथ सगाई कराने। सभी की बुद्धियोग उनसे लगाती हैं। उनका तो बहुत–2 शुक्रिया मानना चाहिए। जिस बाप से हम विश्व की बादशाही लेते हैं कितनी थैंक्स देनी चाहिए। जो बच्चे रास्ता बताते हैं तो कहेंगे ना मेनी–2 थैंक्स। कल्प–2 हम(को) ऐसे ही इन ब्राह्मणों से रास्ता मिलता है। इतना थैंक्स तुमको देते नहीं है जितना अज्ञान काल में मनुष्य देते हैं। बच्चों को अन्दर में बहुत–2 खुशी होनी चाहिए। रोमांच खड़े हो जाते (हैं)। परिचय देने वाले का अन्दर में शुक्रिया। आपने बहुत अच्छा रास्ता बताया। निमित्त बनी। बाप का परिचय दे पुरुषार्थ कराई; इसलिए तुमको पैगम्बर–मैसेन्जर कहा जाता है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लो। बैज बड़ी अच्छी चीज़ है। अच्छा–2 बनाने लिए पुरुषार्थ बहुत चल रहा है। इनसे ऊँचा कुछ हो नहीं सकता। इनसे तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। तुम इनसे पहचान देते हो। सेकण्ड में किसको जीवनमुक्ति का रास्ता बताओ। उनके लिए यह बैज है। तुम ब्राह्मण हो ना। ब्राह्मणों को चाहिए गीता। यह है गीता का एकदम तंत। पैगाम तो देना है ना। आगे चलकर बहुत ढेर समझने को आवेंगे। ऊँच ते ऊँच बाप की बड़ाई की जाती है। इतनी फिर सपूत बच्चों की भी है। बहुत सपूत तब बनेंगे जब रोज़ अपना पोतामेल रखेंगे। हमारे में यह क्रोध है। इनको छोड़ना है; परन्तु किसके तकदीर में न है तो भूत छोड़ना बड़ा मुश्किल होता है। मोह, लोभ भी ऐसा है। आधा कल्प का है। इनसे अपने को छुड़ाना है। यह मेहनत का काम है। हरेक अपने दिल से पूछते रहे। कोई दुश्मन तो घर में नहीं बैठा है। यह आधा कल्प का दुश्मन है। डाकू भी कहो। अच्छा, ओम।